KHAN G.S. RESEARCH CENTER

Kisan Cold Storage, Sai Mandir, Musallahpur Hatt, Patna - 6

Mob. : 8877918018, 8757354880

Indian Geography Target

By : Khan Sir

(मानचित्र विशेषज्ञ)

भारत का भौतिक विभाजन

☞ भारत के धरातल में अत्यधिक विविधता पायी जाती है। कहीं पर पहाड़ पठार, नदी, गड्ढा कहीं पर सपाट मैदान कहीं पर प्राचीन पठार है।

☞ भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का-

10.7 % पर्वतीय भाग

18.6 % पहाड़ियाँ

27.7 % पठारी क्षेत्र

43% मैदानी भाग

☞ भारत को निम्नलिखित 5 धरातलीय भागों में बाँटा गया है-

(a) उत्तर का पर्वतीय क्षेत्र

(b) उत्तर भारत का विशाल मैदान

(c) प्रायद्वीपीय पठार

(d) तटीय मैदान

(e) भारतीय द्वीप

→ **हिमालय पर्वत क्षेत्र को 4 प्रमुख श्रेणियों में बाँटा गया है-**

1. ट्रांस हिमालय (600 मी.)
2. वृहद या आंतरिक हिमालय (6100 मी.)
3. लघु या मध्य हिमालय (300 मी.)
4. शिवालिक हिमालय (1000 से 2500 मी.)

✶ ट्रांस हिमालय क्षेत्र :-

→ यह यूरेशिया प्लेट का हिस्सा है। अधिकांश भाग तिब्बत में है इसलिए इसे तिब्बती हिमालय/टेथीस हिमालय भी कहा जाता है। (प्राचीनतम भाग)

→ यहाँ पर वनस्पतियों का अभाव है।

→ इसके अन्तर्गत काराकोरम, लद्दाख, पीरपंजाल, कैलाश, जास्कर आदि श्रेणियाँ आती है जिनका निर्माण हिमालय से पहले हुआ है।

→ भारत की सबसे ऊँची K-2 (गाडविन आस्टिन) 8611 मी., काराकोरम श्रेणी की सर्वोच्च चोटी है। K-4 (गैसरब्रुम) प्रमुख चोटी है।

→ काराकोरम श्रेणी में अनेकों ग्लेशियर हैं जिसे-

1. सियाचीन ग्लेशियर 72 km
2. बियाफो ग्लेशियर 63 km
3. बाल्टीरो ग्लेशियर 62 km
4. हिस्पर ग्लेशियर 61 km

→ काराकोरम श्रेणी पामीर की गाँठ से मिलती है जबकि दक्षिण पूर्व की ओर यह कैलाश श्रेणी के रूप में विकसित है।

→ विश्व की सबसे बड़ी ढाल वाली चोटी राकापोशी (लद्दाख श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी) स्थित है।

→ काराकोरम के दक्षिण लद्दाख श्रेणी सिंधु नदी और उसकी सहायक श्योक नदी के मध्य जल विभाजक का कार्य करती है।

→ ट्रांस हिमालय का प्रयोग अवसादी चट्टानों से हुआ है।

→ यहाँ पर रार्शिरों से लेकर कैम्ब्रियन युग तक चट्टानें पायी जाती है।

→ ट्रांस हिमालय, वृहद हिमालय से सचर जोन या हिन्ज लाइन द्वारा अलग होता है।

✶ **वृहद हिमालय या आंतरिक हिमालय :-**

→ इसे महान, सर्वोच्च, हिमाद्री तथा मुख्य हिमालय भी कहते हैं।

→ यह हिमालय की सबसे ऊंची तथा दुर्गम श्रेणी है।

→ सदा हिमाच्छादित रहता है।

औसत ऊंचाई- 6100 मी.

→ **विस्तार :** नंगा पर्वत से नामचाबरबा पर्वत तक

→ इस पर्वत की सबसे ऊंची चोटी माउंण्ट एवरेस्ट (नेपाल)

→ **माउण्ट एवरेस्ट** की चामोलुगमा सागर माथा भी कहते हैं।

→ एवरेस्ट चोटी को तिब्बती भाषा में चोमोलुगमा कहते हैं। जिसका अर्थ है- पर्वतों की रानी।

→ अनेक हिमनद भी पाये जाते हैं- कुमायु हिमालय में मिलाम व गंगोत्री हिमनद और सिक्किम में जेमू हिमनद (लं० 20km)।

सामान्यत : हिमनद की लम्बाई 3 – 5 km होती हैं।

गंगा व यमुना का उद्गम स्थल।

→ पर्वत श्रेणी में अनेक दर्रे हैं कश्मीर में जोजिला व बुर्जिला।

✶ **वृहद हिमालय की चोटियाँ-**

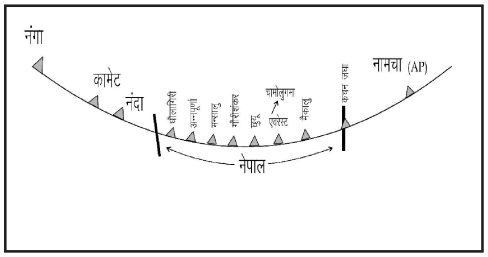

NOTE - कामोट पर्वत के पश्चिम में बन्दरपूछ, यमनोत्री, गंगोत्री, त्रिशुल, बद्रीनाथ, केदारनाथ है।

By : Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)

★ **लघु या मध्य हिमालय :-**

औसत ऊंचाई- 1800-3000 मी. तथा

चौड़ाई- 80-100 km है।

→ परिपंजाल श्रेणी इसका पश्चिमी विस्तार है यहीं पर पीरपंजाल व बनिहाल दर्रा उपस्थित है। बनिहाल दर्रे से होकर जम्मू-कश्मीर जाता है।

→ इसी के पास मसूरी, नैनीताल, रानीखेत और डलहौजी नगर शिमला, कुल्लू, मनाली पर्यटक स्थल है।

→ ढालों पर छोटे-छोटे घास के मैदान पाये जाते हैं जिन्हें कश्मीर में मर्ग (गुलर्म व सोनमर्ग) और उत्तराखण्ड में बुग्यास या पयार कहते हैं।

→ **प्रमुख घाटी :** कश्मीर घाटी, कुल्लु घाटी, कागड़ा घाटी, काठमाण्डू घाटी।

★ **शिवालिक हिमालय :-**

→ इसे उपहिमालय या बाह्य हिमालय या नवीन हिमालय / पदस्थली कहते हैं।

पूर्व में इसकी चौड़ाई 15 km तथा

हिमालय व पंजाब में चौड़ाई 50 km तक है।

→ शिवालिक हिमालय अरूणाचल में डफला, अबोर, मिरी, मिश्मी पहाड़ियों के नाम से जाना जाता है।

→ शिवालिक और मध्य हिमालय के बीच अनेक घाटियाँ पायी जाती हैं। जिसे पश्चिम में दून (उदारहण- देहरादून) पूरब में (उदाहरण- हरिद्वार) कहा जाता है।

→ यह पश्चिम में सुलेमान पर्वत तथा पूरब में आराकाम पर्वत से मिल जाती है।

→ शिवालिक का दक्षिण-पूर्वी-सुदूर भाग अण्डमान है।

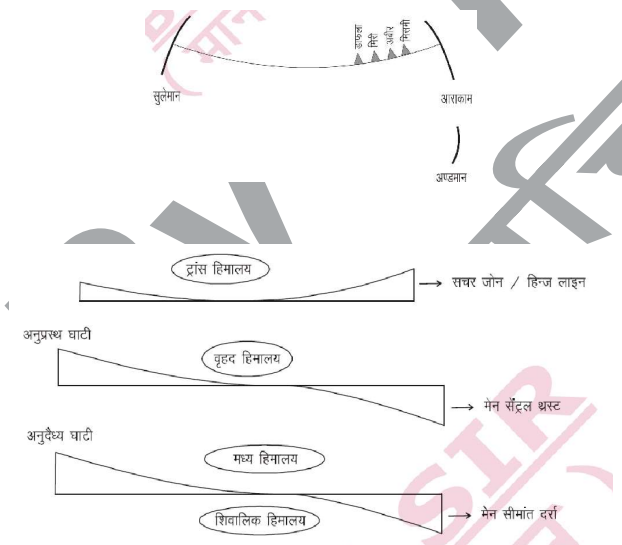

★ **हिमालय का प्रादेशिक विभाजन :-**

1. पंजाब हिमालय
2. कुमायु हिमालय
3. नेपाल हिमालय
4. असम हिमालय

सर सिडनी बुरार्ड द्वारा सर्वप्रथम पूर्व से पश्चिम की ओर हिमालय की 4 प्रादेशिक भागों में विभजित किया गया। यह विभाजन घाटियों की आधार मानकर किया गया।

1. पंजाब हिमालय = सिन्धु - सतलज
2. कुमायु हिमालय = सतलज- काली
3. नेपाल = काली - तिस्ता
4. असम = तिस्ता - दिहांग

<u>भारत की वन</u>

☞ वन अनुसंधान केन्द्र देहरादुन, औसत वन- 33%, भारत- 23 से 24%

☞ सबसे ज्यादा वन- मध्य प्रदेश ।

☞ UT में सबसे ज्यादा - अण्डमान निकोबार।

☞ जापान - 66%

1. उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन-

वर्षा- 200 cm

तापमान- 22 से 23°C

पेड़ पतले लम्बे (विषुवत रेखा)

विषुवत रेखा

पश्चिमी घाट, मेघालय, अण्डमान निकोबार

Ex - रोजवुड, आयरनवुड, महोगनी

2. उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन- (मानसुनी वल)

वर्षा- 100 से 200 सेमी.

तापमान- 25° सेल्सियस

लकड़ी - मुलायम और मजबूत

Ex - आम, जामून, शीशम, सागबान, महुआ।

3. उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन

वर्षा- 70 से 100 सेमी.

वक्ष- विरल

Ex- बेल, पीपल, तेंदु, खैर, बरगद, भोजपत्र, क्षेत्र।

NOTE - कत्था बनाने के लिए खैर की लकड़ी तथा बिड़ी बनाने के लिए तेदु वृक्ष के पत्ते

4. पर्वतीय वन-

हिमलय एवं प्रायद्वीपीय पठारी क्षेत्र

2500 - 400 मी. ऊँचाई पर

आकार- कोणधारी या शंकुधारी

5. मरूथलीय वन-

वर्षा- 50 सेमी., राजस्थान, पत्ती काँटें का रूप

6. दलदली वन-

लकड़ी कठोर और मजबूत, घना, नाव बनाने में, सुन्दर वन डेल्टा।

जलवायु

☞ किसी खास जगह जिसके बारे में सरिक जानकारी हो उसे जलवायु कहते हैं।

☞ भारत में 4 प्रकार की ऋतुएं पायी जाती है।

1. **शीत ऋतु**- यह 15 दिसम्बर से 15 मार्च तक होता है। इस समय चलने वाली ठण्डी हवा को शीत लहर कहते है।
2. **गृष्म ऋतु**- यह 15 मार्च से 15 जून तक होता है। इस समय चलने वाली गर्म हवा को लू कहते है।
3. **वर्षा ऋतु** - यह 15 जून से 15 सितम्बर तक होता है। इस समय मानसून का आगमान हो जाता है।

☞ भारत में मानसून दक्षिण दिशा से जून के पहले सप्ताह में केरल में प्रवेश करता है और 14 जुलाई तक पूरे भारत में फैल जाता है। सबसे अंत में मानसून पंजाब में पहुँचता है। सर्वाधिक वर्षा मानसी राम में सबसे कम वर्षा लद्दाख में होती है। लौटते मानसुन से वर्षा आन्ध्रप्रदेश तथा तमिलनाडु में होते हैं लोटते मानसुन से चक्रवात उड़िसा तथा आन्ध्रप्रदेश में आते हैं। (लौटते मानसुन की दिशा उ०पू० होती है)

☞ **शरद ऋतु**- 15 सितम्बर से 15 दिसम्बर के बीच होता है। इस समय मानसून लौट चुका होता है। मानसून लोटने के कारण आसमान पूरी तरह साफ हो चुका रहता है। जिस कारण चिलचिलाती हुई धूप पड़ती है जिसे हथिया कहते हैं।

प्रमुख खनिज

खनिज	उत्पाद राज्य	प्रमुख खान
ताँबा	मध्य प्रदेश	खेतड़ी
हीरा	मध्य प्रदेश	पन्ना
सोना	कर्नाटक	कोलार
चाँदी	राजस्थान	जवार
जिप्सम	राजस्थान	हनुमानगढ़
टिन	छत्तीसगढ़	बस्तर
अभ्रक	आंध्र प्रदेश	नेल्लोर
लौह अयस्क	उड़ीसा	कर्नाटक कुद्रमुख, छत्तीसगढ़ बैलाडिला, उड़ीसा, क्योंझर
कोयला	छत्तीसगढ़	झरिया धनबाद
थेरियम	केरल	
यूरेनियम	आंध्र प्रदेश	जादुगोड़ा (झारखण्ड)

भारत में विभिन्न जनजातियाँ

☞ भारत की 550 जनजातीय को दो भागों में बाँटते हैं। अनुसूचित जाति (SC) इनकी संख्या 16 % है।

☞ अनुसूचित जनजाति (ST) : इनकी संख्या 8.5 % है।
भारत की सर्वाधिक SC U.P. में है।

→ SC का सर्वाधिक प्रतिशत पंजाब में है।

→ भारत की सबसे बड़ी जनजाति गोंड है। दक्षिण भारत की सबसे बड़ी जनजाति टोडो है।

→ बिहार-झारखण्ड की सबसे बड़ी जनजाति संस्थाल है पूर्वोत्तर की सबसे बड़ी जनजाति बोड़ो है।

जम्मू-कश्मीर	-	गद्दी, वकरवाल
हिमाचल प्रदेश	-	किन्नर
गुजरात	-	भील, बंजारा, पटेलिया, कोली, डाफर, टोलिया
राजस्थान	-	मीना, भील, बंजारा, कोली
उत्तर प्रदेश व उत्तराखण्ड	-	थारू (दिवाली को शोक के रूप में मनाते हैं)
मध्य प्रदेश	-	गोड़, भील
बिहार-झारखण्ड	-	संथाल, मूण्डा, हो
उड़ीसा	-	खोंड
अरुणाचल प्रदेश	-	मिसमी, डाफला
असम	-	बोडो, मिकिर
मेघालय	-	गारो, खासी, जयंतीया
नागालैण्ड	-	मो, अंगामी, नागा
मणीपुर	-	कुकी
मिजोरम	-	मिजो, लुसाई
आंध्र प्रदेश	-	कदर
केरल	-	इरला
तमिलनाडु	-	टोंडा
अण्डमान निकोबार	-	सेम्पेन, भाखा, सेंटलीज (44)

By: Khan Sir (मानचित्र विशेषज्ञ)